Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-3* *Issue-2* *February 2026*

www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

सशक्त जनमाध्यम के रूप में उभरता सामुदायिक रेडियो: एक अध्ययन

डॉ. विनय कुमार

सहायक प्राचार्य, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, ख्वाज़ा मोइनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय, लखनऊ

Article Info: *(Recieved- 09/12/2025, Accept- 18/01/2026, Published- 03/02/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i2004

शोध सार– सामुदायिक रेडियो, शिक्षा, सामुदायिक कल्याण, पर्यावरण जागरूकता, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता की जागरूकता, विविधता में एकता और समग्र विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है। यही नहीं कुछ और स्वतंत्रता मिलने पर यह छोटे–छोटे केन्द्र लोकतंत्र को उसका सही अर्थ प्रदान कर सकते हैं। सामुदायिक रेडियो का उद्देश्य इसे अधिक से अधिक सहभागी बनाना, महिला स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधित सभी प्रसारण की पहुंच, सूचना की खाई को कम करना, सही और सामयिक सूचना को उन तक पहुंचाना है। सशक्त जनमाध्यम के रूप में उभरता सामुदायिक रेडियो को शोध विषय बनाने का मकसद यह जानना है कि सामुदायिक रेडियो श्रोताओं की जागरूकता में किस प्रकार वृद्धि कर रहा है। इसके द्धारा प्रसारित कार्यक्रमों का श्रोताओं पर क्या प्रभाव है। ऐसे में स्थानीय स्तर पर श्रोताओं में जागरूकता फैलाने में सामुदायिक रेडियो की भूमिका का अध्ययन किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है। इस हेतु उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ स्थित सीएमएस (सिटी मॉण्टेसरी स्कूल) सामुदायिक रेडियो केंद्र का चुनाव उद्देश्यपूर्ण ढंग से किया गया है।

बीज शब्द– समुदाय, सामुदायिक रेडियो, जनमाध्यम, जागरूकता, स्वच्छता, जिज्ञासा, अनुसूची, स्वनिर्मित, सामाजिक परिदृश्य, रेडियो प्रसारण

मूल आलेख

मीडिया विस्फोट के इस दौर में जहाँ एक ओर भारतीय उपग्रह चौनल आपसी प्रतिस्पर्धा में सिर्फ बाज़ार को दृष्टिगत रखते हुए, कार्यक्रमों का प्रसारण कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर निजी एफएम चौनलों की भीड़ फिल्मी संगीत और पॉप म्यूज़िक का प्रसारण कर राजस्व कमाने की होड़ में जुटी है। आकाशवाणी अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता को स्वीकारता है किन्तु राजस्व अर्जन के बढ़ते दबाव के चलते आकाशवाणी ज़बरदस्त बदलाव के दौर से गुज़र रहा है। आम भारतीय की स्थानीय समस्याओं और हितों को दृष्टिगत रखते हुए आकाशवाणी द्वारा राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर के प्रसारण के साथ–साथ देश भर में स्थानीय स्तर पर कई 'लोकल रेडियो स्टेशन' आरम्भ किए गए। देश भर में बिछे रेडियो चौनलों के जाल के बावजूद लगातार यह महसूस किया जाता रहा कि कुछ है जो छूट रहा है, छोटे समुदायों के प्रसारण हितों और अधिकारों का पूर्णतया संरक्षण नहीं हो पा रहा है। सम्भवतः इसीलिए भारत में सामुदायिक रेडियो को वैधानिक मान्यता मिलते ही कई समुदायों का ध्यान इस ओर गया है। सामुदायिक रेडियो को किसी एक परिभाषा में बाँधना सम्भव नहीं है। प्रत्येक देश के संस्कृति सम्बन्धी क़ानूनों में अन्तर होने के कारण देश और काल के साथ इसकी परिभाषा बदल जाती है। किन्तु मोटे तौर पर किसी छोटे समुदाय द्वारा संचालित, कम लागत वाला रेडियो जो समुदाय के हितों, उसकी पसंद और समुदाय के विकास को दृष्टिगत रखते हुए गैर–व्यावसायिक प्रसारण करता है, सामुदायिक रेडियो केन्द्र कहलाता है। ऐसे रेडियो केन्द्र द्वारा कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, समाज कल्याण, सामुदायिक विकास, संस्कृति सम्बन्धी कार्यक्रमों के प्रसारण के साथ–साथ समुदाय के लिए तात्कालिक प्रासंगिता के कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा सकता है। सामुदायिक केन्द्र का उद्देश्य समुदाय के सदस्यों को शामिल कर समुदाय के लिए कार्य करना है।

सामुदायिक रेडियो किसी लक्षित समूह के श्रोताओं पर अपना विशेष प्रभाव डालने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका

निभा रहा है। सामुदायिक रेडियो का विकास भले अभी हुआ हो, लेकिन इसकी शुरूआत आजादी के पहले से ही हो चुकी थी। सन् 1935 में इलाहाबाद स्थित कृषि संस्थान ऐसा ही एक रेडियो स्टेशन संचालित करता था। आजादी के बाद पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय को प्रयोग के रूप में रेडियो की अनुमति दी गई। लेकिन बाद में सरकार ने इसकी अनुमति निजी संगठनों को नहीं दी। सन् 1995 में सर्वोच्च न्यायालय ने एक महत्वपूर्ण फैसला दिया, जिसमें वायु तरंगों के एकाधिकार को गलत ठहराया गया। इससे स्वयं सेवी संगठनों को सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त हुआ और भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मंत्रालय ने सामुदायिक रेडियो स्थापित करने की अनुमति प्रदान करना प्रारंभ किया, जिसके परिणामस्वरूप देश का पहला कैम्पस रेडियो 2 फरवरी 2004 को चेन्नई के अन्ना विश्वविद्यालय में खोला गया। इसके बाद कई सामाजिक संगठनों एवं विश्वविद्यालयों ने संचार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपना रेडियो स्टेशन स्थापित किया और सामाजिक विकास के प्रयासों में एक नया आयाम जुड़ता गया। देश के विभिन्न हिस्सों में बिछे रेडियो चौनलों के जाल के बावजूद लगातार यह महसूस किया जाता रहा है कि कुछ है जो छूट रहा है।

सामुदायिक रेडियो एक रेडियो सेवा है जो वाणिज्यिक और सार्वजनिक प्रसारण के अलावा रेडियो प्रसारण के तीसरे मॉडल की पेशकश करती है। सामुदायिक स्टेशन भौगोलिक समुदायों और रुचि के समुदायों की सेवा करते हैं। वे ऐसी सामग्री प्रसारित करते हैं जो स्थानीय, विशिष्ट श्रोताओं के लिए लोकप्रिय और प्रासंगिक है लेकिन अक्सर वाणिज्यिक या मास–मीडिया प्रसारकों द्वारा अनदेखी की जाती है। सामुदायिक रेडियो स्टेशन उन समुदायों द्वारा संचालित, स्वामित्व और प्रभावित होते हैं जिनकी वे सेवा करते हैं। वे आम तौर पर गैर–लाभकारी होते हैं और व्यक्तियों, समूहों और समुदायों को अपनी कहानियां बताने, अनुभव साझा करने और मीडिया–समृद्ध दुनिया में, मीडिया के निर्माता और योगदानकर्ता बनने के लिए सक्षम करने के लिए एक तंत्र प्रदान करते हैं। दुनिया के कई हिस्सों में, सामुदायिक रेडियो प्रसारण के अलावा समुदाय और स्वैच्छिक क्षेत्र, नागरिक समाज, एजेंसियों, गैर सरकारी संगठनों और नागरिकों के लिए सामुदायिक विकास के लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए साझेदारी में काम करने के लिए एक वाहन के रूप में कार्य करता है। फ्रांस, अर्जेंटीना, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और आयरलैंड जैसे कई देशों में कानूनी रूप से परिभाषित सामुदायिक रेडियो (एक विशिष्ट प्रसारण क्षेत्र के रूप में) हैं। परिभाषा के हिस्से के रूप में अधिकांश कानूनों में "सामाजिक लाभ", "सामाजिक उद्देश्य" और "सामाजिक लाभ" जैसे वाक्यांश शामिल हैं। सामुदायिक रेडियो अलग–अलग देशों में अलग–अलग विकसित हुआ है और यूनाइटेड किंगडम, आयरलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में इस शब्द के कुछ अलग अर्थ हैं, जहां बोलने की स्वतंत्रता कानूनों और वास्तविक वास्तविकताओं में भिन्नता है। ऐसी कोई भी संस्था जो व्यावसायिक, राजनैतिक, आपराधिक गतिविधियों से सम्बद्ध हो या जिसे केन्द्र अथवा राज्य सरकार द्वारा अवैध घोषित किया गया हो, सामुदायिक रेडियो खोलने की हक़दार नहीं है। व्यक्ति विशेष को भी यह अधिकार प्राप्त नहीं है। ऐसी पंजीकृत संस्थायें जो कम से कम तीन वर्षों से सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में कार्य कर रही हों, सामुदायिक रेडियो के लाइसेंस के लिए आवेदन कर सकती हैं।

भारत में निजी एफएम और सामुदायिक रेडियो पर अब तक समाचारों के प्रसारण की अनुमति नहीं हैं। एक घंटे के प्रसारण समय में पांच मिनट के विज्ञापन बजाए जा सकते हैं। प्रायोजित कार्यक्रमों के प्रसारण की अनुमति नहीं है किन्तु राज्य अथवा केन्द्र सरकार से प्रायोजित कार्यक्रम प्राप्त होने की दशा में इन्हें प्रसारित किया जा सकता है। आने वाले कुछ वर्षों में भारत भर में लगभग चार हज़ार कम्युनिटी रेडियो केन्द्र खोले जाने का अनुमान है। मीडिया का निजीकरण और पूर्णतः स्वतंत्र मीडिया आम भारतीय के लिए मायने नहीं रखता। आज भी भारत, गांव में बसता है और भारतीय ग्रामीणों की प्रसारण आवश्कताओं की पूर्ति बड़े प्रसारक नहीं कर सकते। जिस देश में बहुत कम दूरियों पर लोगों की ज़रूरतें, भाषा और संस्कृति बदल जाती हों वहां यह संभव भी नहीं है। सामुदायिक रेडियो, सामुदायिक कल्याण, पर्यावरण जागरूकता, विविधता में एकता ओर समग्र विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

सामुदायिक रेडियो के लिए कोई भी गैर सरकारी संगठन और शिक्षण संस्थान लाइसेंस के लिए आवेदन कर सकता है। ये संगठन कम से कम तीन साल से पंजीकृत हो ये अनिवार्य है। सामुदायिक रेडियो के लिए केन्द्रीय वित्त सहायता उपलब्ध नहीं है, सामुदायिक रेडियो लाइसेंस के हकदार वो होते हैं जो 100 वाट रेडियो स्टेशन चलाते हों, इसका कार्यक्षेत्र कम से कम 12 किलोमीटर की त्रिज्या में हो। इसके तहत संचालक अधिकतम 30 मीटर ऊँचा एंटीना लगा सकता हैं। सामुदायिक रेडियो स्टेशनों से कम से कम 50 प्रतिशत प्रोग्राम स्थानीय स्तर पर, स्थानीय भाषा में बनाये जाने की अपेक्षा की जाती है। सामुदायिक रेडियो हर किसी को अपनी बात कहने की पूरी आजादी देता है, समुदाय में जाकर उनसे बात करना, उनके मुद्दों को समझना इसके बाद समुदाय की सहभागिता से कार्यक्रम निर्माण लोकल भाषा में करना इसकी मुख्य विशेषता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से श्रोताओं को प्राप्त होने वाले ज्ञान और जागरूकता का अध्ययन करना।
2. सामुदायिक रेडियो के प्रति श्रोताओं के दृष्टिकोण और इसके प्रभाव का अध्ययन करना।
3. सामुदायिक रेडियो के द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को सुनने वाले श्रोताओं की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में 'सशक्त जनमाध्यम के रूप में उभरता सामुदायिक रेडियोरू एक अध्ययन' के विषय के लिए उत्तर–प्रदेश की राजधानी लखनऊ से संचालित सीएमएस सामुदायिक रेडियो द्वारा अपनाई जाने वाली क्रियाविधि को जानने के लिए इनके द्वारा प्रसारित जागरूकता कार्यक्रमों की पहचान, इन कार्यक्रमों के माध्यम से जुड़े संदेशों की पहचान तथा इन जागरूकता संबंधी प्रयासों की भूमिका के विषय में सीएमएस सामुदायिक रेडियो की परिधि में आने वाले श्रोताओं के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करने के लिए 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का उपयोग किया गया है।

कार्य क्षेत्र एवं निदर्शन

प्रस्तुत शोध में सीएमएस सामुदायिक रेडियो सुनने वाले श्रोताओं का चयन करने हेतु गैर–संभावना निदर्शन के अंतर्गत आने वाले उद्देश्यपरक निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया। शोधकर्ता द्वारा ऐसे श्रोताओं को ही उत्तरदाता के रूप में चुना गया है, जो सीएमएस सामुदायिक रेडियो सुनते है। अतः यह सविचार निदर्शन पद्धति है।

निदर्शन की संख्या

प्रस्तुत अध्ययन में शोध उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए अध्ययन के न्यादर्श के रूप में सीएमएस सामुदायिक रेडियो का चयन उद्देश्यपूर्ण पद्धति से किया है। सीएमएस सामुदायिक रेडियो स्टेशन के माध्यम से प्रसारित होने वाले जागरूकता से संबंधित कार्यक्रमों की भूमिका का अध्ययन करने के लिए नियमित श्रोताओं के बीच से न्यादर्श का चयन करने के लिए निदर्शन की उद्देश्यपूर्ण पद्धति से 100 श्रोताओं का चयन किया गया। सूचनाओं एवं तथ्यों की पुष्टि तथा आवश्यक विशिष्ट जानकारी प्राप्त करने के लिए सामुदायिक रेडियो स्टेशन में कार्यरत सदस्यों एंव इससे जुड़े लोगों का साक्षात्कार के लिए चयन भी उद्देश्यपूर्ण पद्धति से किया गया है।

सीएमएस (90.4) सामुदायिक रेडियो का परिचय

सिटी मॉण्टेसरी स्कूल लखनऊ द्वारा जुलाई 2005 में सीएमएस 90.4 सामुदायिक रेडियो की शुरूआत की गयी। तत्कालीन केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री अर्जुन सिंह ने इसका उदघाटन किया था। सीएमएस अपने दो केन्द्रों सिटी मॉण्टेसरी स्कूल, गोमती नगर और सिटी मॉण्टेसरी डिग्री कॉलेज, एल.डी.ए., कानपुर रोड से 90. 4 मेगाहर्टज की फ्रिकेवेन्सी पर सामुदायिक रेडियो का प्रसारण कर रहा है। सीएमएस शुरुआती दौर में प्रेरणादायक और शैक्षणिक कार्यक्रमों का प्रसारण करता था। सीएमएस सामुदायिक रेडियो गैर लाभकारी रेडियो है। यह शहरी और विशेष कर गरीब ग्रामीण समुदाय के प्रति प्रतिबद्ध है। यह किसी प्रकार के विज्ञापन नहीं लेता है। सीएमएस सामुदायिक रेडियो एक ऐसा प्रयास है जो बिना पढ़े–लिखे और गरीब श्रोताओं को लाभ पहुँचाने का काम कर रहा है।

90.4 मेगाहट्र्ज पर सीएमएस सामुदायिक रेडियो के प्रसारण की शुरूआत प्रतिदिन संकेत संगीत ध्वनि से होती है। जिसमें स्थानीय लोगों की सहभागिता रहती है। इसके कुछ कार्यक्रमों का प्रसारण प्रतिदिन होता है। सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों के प्रमुख आर. के. सिंह है। हर्ष बावा, सोमा घोष, वनिता शर्मा, रविन्द्र त्रिपाठी, मदन के साथ स्थानीय समुदाय के अनेक एंकर और सदस्यों की सहभागिता से कार्यक्रमों का निर्माण किया जाता है।

तथ्यों का संकलन

प्रस्तुत अध्ययन के आंकड़ो का संकलन प्राथमिक स्रोत के माध्यम से किया गया है। प्राथमिक स्रोत के रूप में सामुदायिक रेडियो स्टेशन सीएमएस के श्रोताओं से प्रश्नावली अनुसूची के माध्यम से सूचनाएं प्राप्त की गई। इसके अतिरिक्त सामुदायिक रेडियो स्टेशन में कार्यरत सदस्यों एवं इससे जुड़े लोगों का साक्षात्कार किया गया, जिससे समस्या का आंकलन करने में सहयोग मिल पाए।

तथ्य विश्लेषण एवं व्याख्या

1. आप मनोरंजन के लिए या विभिन्न प्रकार की जानकारियों के लिए निम्न माध्यमों में से किस

जनमाध्यम का इस्तेमाल करती हैं?

(क) समाचारपत्र (ख) पत्रिका (ग) रेडियो (घ) टेलीविजन (ङ) सोशल मीडिया (च) अन्य

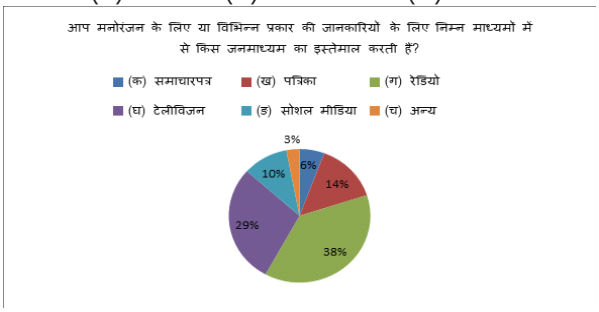

2. क्या आप सामुदायिक रेडियो से परिचित हैं?

(क) पूर्णतः परिचित (ख) परिचित (ग) अंशतः परिचित (घ) थोड़ा परिचित (ङ) बिल्कुल परिचित नहीं

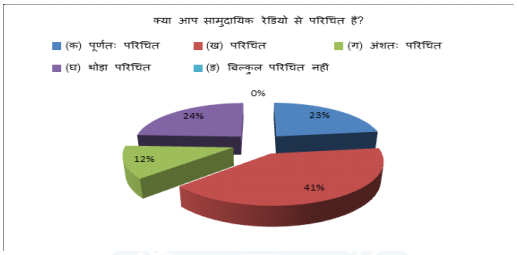

3. सामुदायिक रेडियो पर आप किस प्रकार के कार्यक्रमों को सुनना पसंद करती हैं?

(क) गीत–संगीत आधारित कार्यक्रम (ख) नवीन जानकारी प्रदान करने वाले कार्यक्रम (ग) अद्यतन विषय पर आधारित कार्यक्रम (घ) स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी कार्यक्रम (ङ) खेल संबंधी कार्यक्रम (च) सामाजिक आर्थिक जगत संबंधी कार्यक्रम (छ) अन्य

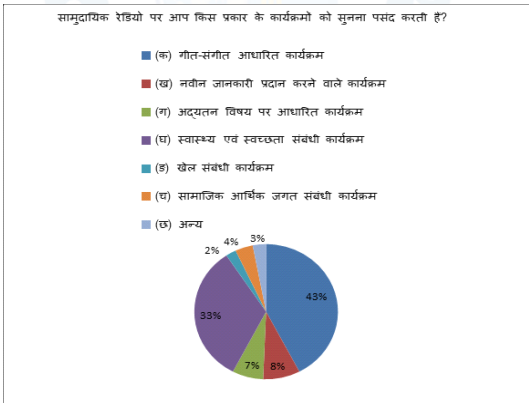

4. आप किस समय सिटी मॉण्टेसरी रेडियो सुनती हैं?

(क) सुबह (ख) दोपहर (ग) शाम (घ) कभी भी (ङ) निर्धारित नहीं कर सकते

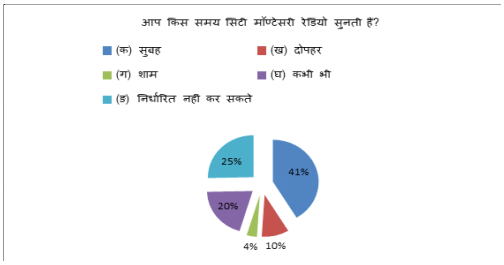

5. आप कितनी देर के लिए रेडियो सुनती हैं?

(क) एक घंटे से कम (ख) एक से दो घंटे (ग) दो से तीन घंटे (घ) तीन घंटे से अधिक (ङ) कह नहीं सकते

6. सामुदायिक रेडियो स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरुकता पर आधारित कार्यक्रमों को प्रस्तुत करता है?

(क) हमेशा (ख) अक्सर (ग) कभी–कभी (घ) शायद ही कभी (ङ) कभी नहीं

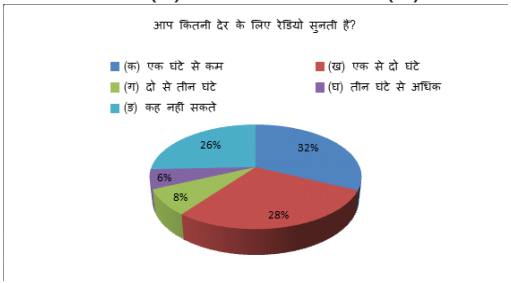

7. श्रोताओं की जागरूकता के क्षेत्र में संचार माध्यमों का योगदान है?

(क) बहुत ज्यादा (ख) ज्यादा (ग) सामान्य (घ) बहुत थोड़ा (ङ) बिल्कुल नहीं

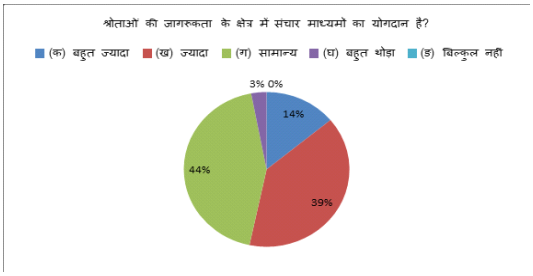

8. सामुदायिक रेडियो श्रोताओं को अपनी बात रखने या किसी विषय पर कोई सवाल पूछने की सुविधा प्रदान करता है?

(क) कभी नहीं (ख) शायद ही कभी (ग) कभी–कभी (घ) अक्सर (ङ) हमेशा

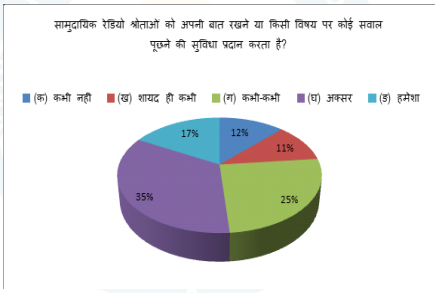

शोध का परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन कार्य का उद्देश्य उत्तर–प्रदेश की राजधानी लखनऊ स्थित सामुदायिक रेडियो सिटी मॉण्टेसरी स्कूल के माध्यम से प्रसारित होने वाले जागरूकता के संबंध में सामुदायिक रेडियो की भूमिका को जानने का प्रयास करना था। इस हेतु अध्ययन कार्य में सीएमएस सामुदायिक रेडियो की परिधि में आने वाले श्रोताओं से अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया। इसके लिए गोमती नगर ब्रांच के गाँव मल्हौर, मकदूमपुर और एल.डी.ए. ब्रांच के गाँव झिलझिलापुरवा, गोमती नगर, आदि कवरेज जोन में 10–12 किलोमीटर रेडियस के अंतर्गत निवासरत श्रोताओं का चयन किया गया।

आकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित अनुसूची का निर्माण किया गया है। इसमें सामुदायिक रेडियो स्टेशन सीएमएस के 100 महिला श्रोताओं का निदर्शन के आधार पर चयन कर तथ्यों के संकलन हेतु संबंधित उद्देश्यों के आधार पर अनुसूची का निर्माण किया गया। अनुसूची के माध्यम से प्राप्त होने वाले उत्तर का विश्लेषण भी खंडवार किया गया। आंकड़ो के बोध्यगम्य होने के पश्चात् उनका विश्लेषण किया गया। इस अध्याय में परिणामों का प्रस्तुतीकरण किया गया है।

उद्देश्य का परीक्षण

उद्देश्य 1: सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के माध्यम से श्रोताओं को प्राप्त होने वाले ज्ञान और जागरूकता का अध्ययन करना।

अनुसूची के प्रश्न संख्या 2 के माध्यम से इस उद्देश्य को पूरा करने का प्रयास किया गया। सामुदायिक रेडियो के बारे में केंद्रित रूप से जानकारी हासिल किया गया। यदि सीधे–सीधे सामुदायिक रेडियो संबंधी प्रश्न के माध्यम से प्रश्नों की शुरुआत की जाती तो उत्तरदाताओं के प्रभावित होने या सामुदायिक रेडियो के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित होने की स्थिति बन सकती थी। इसी वजह से शोध अनुसूची में प्रश्नों के प्रारंभ में सीधे तौर पर

सामुदायिक रेडियो की चर्चा करने से परहेज करने का काम किया गया। इस प्रकार से जब शोध में शामिल उत्तरदाताओं ने खुद के अनुभव से अपना विकल्प चुना तो शोध पूर्वाग्रह से रहित हो गया। इससे जहां अध्ययन में प्रगाढ़ता आई वहीं परिपुष्ट आंकड़े भी हासिल हो पाए। इस प्रकार प्रश्न संख्या 2 के माध्यम से यह जानकारी हासिल हुई कि सामुदायिक रेडियो के प्रति प्रसारण क्षेत्र में निवासरत लोगों की विशेष तौर पर जागरूकता है। शोध में शामिल उत्तरदाता इसका इस्तेमाल मनोरंजन और अन्य जानकारी हासिल करने के लिए एक प्रमुख जनमाध्यम के तौर पर करती हैं। अनुसूची में प्रश्न संख्या 7 के माध्यम से पूछा गया कि सामुदायिक रेडियो जागरुकता पर आधारित कार्यक्रमों को प्रस्तुत करता है तो यह तथ्य ज्ञात हुआ कि अधिकांश श्रोता सामुदायिक रेडियो प्रसारण सुनते हैं, तो इसके साथ ही उनकी जानकारी और मनोरंजन का स्तर भी बढ़ता है, जिससे अंततः कई रूपों में उन्हें भ मिलता है।

उद्देश्य 2: सामुदायिक रेडियो के प्रति श्रोताओं के दृष्टिकोण और इसके प्रभाव का अध्ययन करना। शोध अनुसूची के अंतर्गत प्रश्न 7 के तहत यह जानकारी हासिल करने का कार्य किया गया। इसके अंतर्गत जागरूकता के क्षेत्र में संचार माध्यमों के योगदान है की जानकारी हासिल की गई। श्रोताओं ने माना कि उनके जागरूकता में जनमाध्यमों का योगदान सामान्य है वहीं कई सारे श्रोताओं ने इसको ज्यादा भी बताया। कहने का तात्पर्य यह है कि बड़ी संख्या में श्रोताओं ने जनमाध्यमों के योगदान को स्वीकार किया है। अनुसूची के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6 के माध्यम से भी इस उद्देश्य की पूर्ति हुई। शोध कार्य में शामिल उत्तरदाताओं से जब एक प्रश्न के रूप में यह पूछा गया कि सामुदायिक रेडियो केंद्र द्वारा प्रसारित जागरूकता संबंधी कार्यक्रमों का आप पर किस प्रकार से प्रभाव पड़ रहा है तो अधिकांश उत्तदाताओं ने सकारात्मक तौर पर इस प्रश्न का उत्तर दिया। उत्तरदाताओं का कहना था कि सीएमएस सामुदायिक केंद्र द्वारा प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों को सुनने के क्रम में वे पहले से ज्यादा जागरूक हुईं हैं। साथ ही कई उत्तरदाता का मानना था कि सामुदायिक रेडियो पर प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से साफ–सफाई संबंधी जागरूकता आई है।

उद्देश्य 3: सामुदायिक रेडियो के द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को सुनने वाले श्रोताओं की प्रवृत्ति का अध्ययन करना। शोध अध्ययन के माध्यम से सामुदायिक रेडियो केंद्र द्वारा प्रसारित स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों को श्रोता किस प्रकार देखती हैं इसकी जानकारी प्रश्न 6 में प्राप्त हुई। जब सीएमएस सामुदायिक रेडियो केंद्र के श्रोताओं से यह पूछा गया कि रेडियो केंद्र द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को आप किस प्रकार देखते हैं तो अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना था कि कार्यक्रम काफी अच्छे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से उनमें पहले से अधिक जागरूकता का संचार हुआ है। स्वास्थ्य एवं स्वच्छता विषय पर आधारित कार्यक्रमों का प्रसारण सीएमएस सामुदायिक रेडियो केंद्र द्वारा अक्सर ही किया जाता रहता है। इससे उनको स्वास्थ्य एवं स्वच्छता को लेकर नई जानकारियां लगातार हासिल होती रहती है। सामुदायिक रेडियो के बारे में पूरी जानकारी होने के साथ–साथ श्रोताओं की दिनचर्या में भी इस माध्यम का अहम स्थान है। इस तथ्य से भी इस उद्देश्य की पूर्ति हुई। रेडियो अपने श्रोताओं के लिए विभिन्न विषयों पर कार्यक्रमों का प्रसारण करता है। इससे श्रोताओं की प्रवृत्ति जानने को मिली।

निष्कर्ष

सामुदायिक रेडियो सामाजिक जीवन की समग्र गुणवत्ता को ऊंचा उठाने का एक कारगर साधन है। जीवन की समग्र गुणवत्ता को बेहतर बनाने में एक प्रमुख अवयव की तरह दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन– सशक्त जनमाध्यम के रूप में उभरता सामुदायिक रेडियोरू एक अध्ययन के परिणामस्वरूप हम निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सिटी मॉण्टेसरी स्कूल सामुदायिक रेडियो केंद्र के प्रसारण दायरे में रहने वाली श्रोताओं में से अधिकांश के लिए मनोरंजन और अन्य जानकारियों का प्रमुख स्रोत रेडियो है। श्रोता इसका प्रयोग मनोरंजन और अन्य जानकारी हासिल करने के लिए एक प्रमुख जनमाध्यम के तौर पर करते हैं। जागरूकता को लेकर सीएमएस सामुदायिक रेडियो केंद्र अक्सर अपने कार्यक्रमों के जरिये सूचनाएं श्रोताओं तक पहुँचता रहता है। सामुदायिक रेडियो एक ऐसा माध्यम है, जो अपने श्रोताओं को जानकारियों का समुचित भंडार प्रदान करता है। अध्ययन में इस तथ्य की जानकारी भी मिली कि अधिकांश श्रोता स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के बारे में परिचित हैं। साथ ही यह तथ्य भी ज्ञात हुआ कि सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रमों का नियमित श्रवण श्रोताओं की दिनचर्या को जहां निर्धारित करता है, वहीं कई विषयों पर कार्यक्रमों के माध्यम से उनमें निरंतरता व जागरूकता का संचार भी करता है। शोध में शामिल की गई अधिकांश श्रोता सुबह के समय रेडियो सुनना ज्यादा पसंद करती हैं। इसके पीछे की जो वजह शोध अध्ययन के उपरांत निकलकर आई वो यह है कि इस समय में अधिकांश श्रोता विभिन्न कार्यों में संलग्न रहते हैं, जिसके दौरान रेडियो सुनना उन्हें एक लय प्रदान करता है। विभिन्न प्रतिस्पर्धी जनमाध्यमों और सोशल मीडिया के आगमन के बावजूद रोजाना रेडियो सुनने वाले श्रोताओं की संख्या आज भी

बहुत है।

सीएमएस सामुदायिक रेडियो अपने श्रोताओं को उनके सवालों को पूछ कर जिज्ञासाओं को शांत करने का मौका भलीभांति प्रदान करता है। सीएमएस सामुदायिक रेडियो केंद्र द्वारा प्रसारित स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता संबंधी कार्यक्रमों का प्रभाव श्रोताओं के ऊपर बेहतर ढंग से पड़ रहा है। शोध अध्ययन के जरिये यह तथ्य ज्ञात हुआ कि श्रोताओं के मन में उठने वाले स्वास्थ्य संबंधी जिज्ञासाओं को रेडियो अच्छे से सुलझाता है। रेडियो से कई प्रकार की जानकारियां मिलती हैं। सामुदायिक रेडियो द्वारा प्रसारित कार्यक्रम जिज्ञासाओं को बढ़ाता है और साथ ही उनका समाधान भी करता है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. श्वेता प्रजापति, अतीत की दृष्टियां: भारत में सामुदायिक रेडियो के भविष्य की खोज, संचार माध्यम, खंड 29, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली, अंक–1(जनवरी–मार्च, 2017), पृष्ठ संख्या 5–18
2. डॉ. साधना श्रीवास्तवा, महिला सशक्तिकरण में सिटी मांटेसरी स्कूल लखनऊ के सामुदायिक रेडियों की भूमिका का विश्लेषण, भाषा, साहित्य और मानविकी, अवसण.1(2) जून 2016, पृष्ठ संख्या 8–14
3. विकास चन्द्र, रेडियो व प्रसारण शिक्षा योजना, (जनवरी 2016) पृष्ठ संख्या 66–68
4. मनीष कुमार जैसल, ग्रामीण विकास में सामुदायिक रेडियो की भूमिका का एक अध्ययन, भाषा, साहित्य और मानविकी, अवस.3 (6) जून 2016, पृष्ठ संख्या 8–14
5. उषा रानी, कम्युनिटी रेडियो इन इंडिया: रिव्यु ऑफ ब्राडकास्टिंग पॉलिसी, जर्नल ऑफ मीडिया एण्ड सोशल डेवलपमेंट, 2013,पृष्ठ संख्या 56–73
6. रचना सैनी, हिस्टींकल परस्पेक्टिव ऑफ कम्युनिटी रेडियो इन इंडिया, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ इनफॉरमेटिव एवं फयूचरिस्टिक रिसर्च, दिसम्बर 2013, पृष्ठ संख्या 97–100
7. कंचन मलिक, सामुदायिक रेडियो पर शोधः संकल्पनानात्मक और अनुभवजन्य, संचार माध्यम, खंड 29, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली, अंक–1 (जनवरी–मार्च, 2017), पृष्ठ संख्या 37–51
8. विनोद सी. अग्रवाल, भारत में सामुदायिक रेडियो का भविष्य, योजना, जुलाई 2013, पृष्ठ संख्या 49
9. डॉ. कंकुरन दत्ता एवं डॉ. अनामिका रे, भारत में शैक्षिक रेडियो, रोजगार समाचार, अवस.18 (36), दिसंबर 2013, पृष्ठ संख्या 36–48
10. राम भट्ट एवं सविता बैलूर, भारत में सामुदायिक रेडियो की स्थिति और चुनौतियाँ, योजना, जुलाई 2013, पृष्ठ संख्या 23–24
11. सुतुल श्रीवास्तव एवं हर्षित बिस्ट, ग्रामीण समुदाय के लिए सूचना प्रसारण स्रोत के रूप में सामुदायिक रेडियो, ग्लोबल रिसर्च एनालिसिस, नवम्बर 2013, पृष्ठ संख्या 134
12. अलका त्यागी, सामुदायिक रेडियो वनस्थली की शैक्षिक उपादेयता– एक अध्ययन, लघु शोध प्रबंध, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली राजस्थान, 2013
13. वेंकट के. लक्ष्मी एवं आर. चन्द्रलेखा, ए स्टडी ऑफ सोशियल एक्टिविटीज ऑफ एफएम रेडियो स्टेशन, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव रिसर्च एण्ड डवलपमेंट, मई 2013, पृष्ठ संख्या 72–78
14. किरण बंसल एण्ड सोहनवीर चौधरी, रोल ऑफ इन्टरेक्टिव रेडियो इन डिस्टेन्स एज्युकेशनः एनइवेलवेटिव स्टडी, ओपन लर्निंग जर्नल, जेनुअरि, 1999, पृष्ठ संख्या 61–65
15. एस्थर कर, सामुदायिक रेडियो के माध्यम से लोगों का सशक्तिकरण, संचार माध्यम, खंड 29, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली, अंक–1 (जनवरी–मार्च, 2017), पृष्ठ संख्या–19–36

Cite this Article-

'डॉ. विनय कुमार', "सशक्त जनमाध्यम के रूप में उभरता सामुदायिक रेडियोः एक अध्ययन", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:02, February 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."